R-27

(i) Printed Pages: 3 Roll No. .....

(ii) Questions : 5 Sub. Code : 1 0 6 3 1

Exam. Code : 5 0 0 2

Bachelor of Arts (FYUP) 2nd Semester

(2055)

HINDI

Paper : Aadhunik Hindi Kavita Avum Upanayas Mein Manav Mulya

Time Allowed : Three Hours] **[Maximum Marks : 45**

नोट :– निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। भाषा की शुद्धता का ध्यान रखें। अनावश्यक विस्तार से बचें।

इकाई–एक

1. सप्रसंग व्याख्या करें :

असंख्य कीर्ति–रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह–सी।
सपूत मातृभूति के रुको न शूर साहसी।
अराति सैन्य सिंधु में–सुबाड़वाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो–बढ़े चलो बढ़े चलो।

अथवा

त्याग प्राप्त का ही होता, मैं अधिकार नहीं खोता।
अबल तुम्हारा राम नहीं, विधि भी उस पर वाम नहीं।
वृथा क्षोभ का काम नहीं, धर्म बड़ा, धन–धाम नहीं।
किसने क्या अन्याय किया, कि जो क्षोभ यों जाय किया ? 8

2. मैथिलीशरण गुप्त जी 'आर्य-भाव' कविता का उद्देश्य स्पष्ट करें।

अथवा

जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय लिखिए। 12

इकाई-दो

3. सप्रसंग व्याख्या करें :

मनू तिनककर सीधी खड़ी हो गई। तमककर कुछ कहना चाहती थी। एक क्षण होंठ नहीं खुल सके। मोरोपंत ने शांत करने के प्रयोजन से, भरसक धीमे स्वर में परंतु क्रोध के सिलसिले में कहा, 'सैकड़ों बार कहा कि समय देखकर चलना चाहिए। हम लोग न तो छत्रधारी हैं और न सामंत सरदार। साधारण गृहस्थों की तरह संसार में रहन-सहन रखना है। पढ़ी-लिखी होने पर भी न जाने सुनती-समझती क्यों नहीं है। कह दिया कि भाग्य में हाथी नहीं लिखा है। हठ मत किया कर।'

अथवा

मनू के होंठ सिकुड़े। चुनौती-सी देती हुई बोली, 'मेरे भाग्य में एक नहीं दस हाथी लिखें है।' मोरोपंत का क्रोध भीतर सरक गया। हँस पड़े। मनूबाई को पेट से चिपका लिया। कहा, 'अब चल, कोई शास्त्र-पुराण पढ़। तब तक वे दोनों लौट आते हैं।'

मनू मचली। बोली, 'मैं अपने घोड़े पर बैठकर सैर को जाऊँगी और उस हाथी को तंग करूँगी। मोरोपंत सीधे शब्दों में वर्जित करना चाहते थे, परंतु इस उपकरण में सफलता के चिह्न न पाकर उन्होंने तुरंत बहाना बनाया, 'घोड़े से यदि हाथी चिढ़ गया तो तू भले ही बचकर निकल आए, पर नाना साहब, रावसाहब तथा महावत मारे जाएँगे।' 8

4. रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'झांसी की रानी' उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। 12

इकाई-तीन

5. किसी एक विषय को विस्तार दीजिए :—

(1) समरथ को नहिं दोष गोसाईं

(2) करत-करत अभ्यास ते

(3) परोपकार। 5